Impact Factor – 6.261

ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January - 2019

SPECIAL ISSUE- 83

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में विविध विमर्श

खण्ड - एक

(मुस्लिम, आदिवासी, बाल तथा दिव्यांग विमर्श)

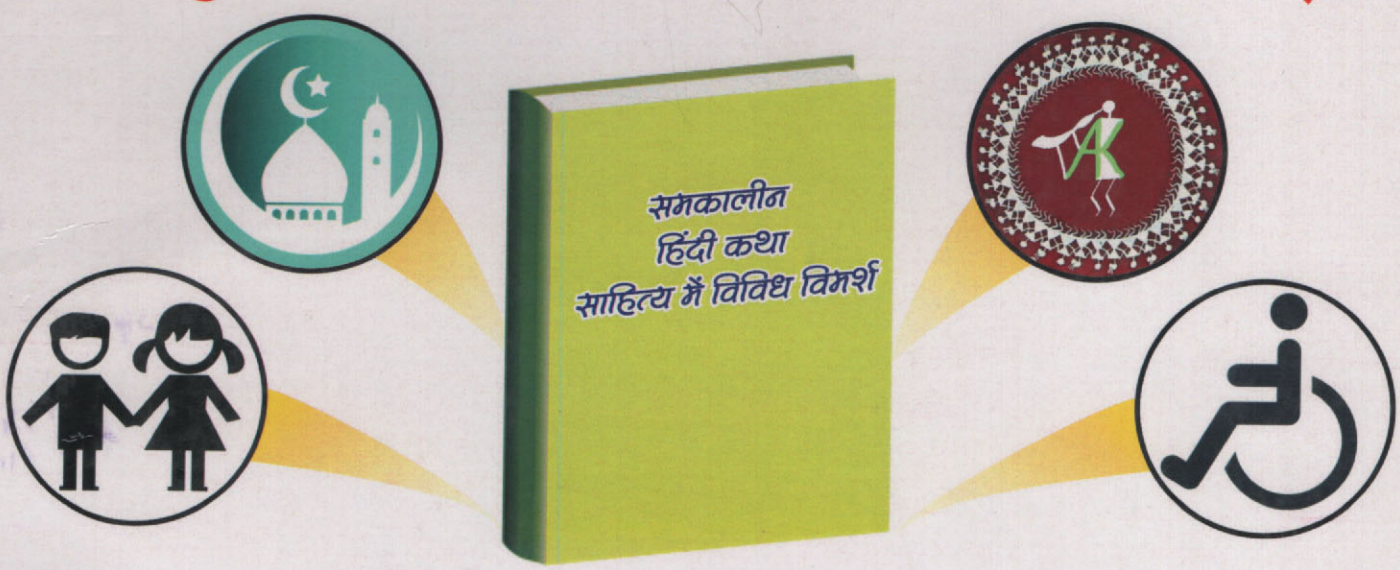

विशेषांक संपादक :

डॉ.सौ. सुरैय्या इसुफअली शेख

असोसिएट प्रोफेसर तथा शोध निर्देशक

अध्यक्षा, हिंदी विभाग,

मा.ह. महाडीक कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,

मोडनिंब, तह. माढा, जि. सोलापुर, महाराष्ट्र-भारत.

अध्यक्षा, हिंदी अध्ययन मंडल, सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर

मुख्य संपादक :

डॉ. धनराज धनगर

This Journal is indexed in :

- UGC Approved Journal
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

RESEARCH JOURNEY

MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL

SWATIDHAN PUBLICATIONS

33	आदिवासी विमर्श में समकालीन यात्रा साहित्य का अवदान (आदिवासी लोक की यात्राएँ के संदर्भ में)	हेमंत कुमार	118
34	आदिवासियो की समस्याएँ	जयसिंह पवार	123
35	आदिवासी संघर्ष और रणेन्द्र ग्लोबल गाव का देवता उपन्यास	सुशील कुमार	127
36	समकालीन कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श	बिनिता मिश्रा	131
37	आदिवासी जीवन यथार्थ और भारतीय साहित्य	नीरज कुमार सिंन्हा	134
38	समकालीन हिंदी कथा- साहित्य में आदिवासी विमर्श	रेशमा कांबळे	139
39	समकालीन हिंदी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श	सिराज	145
40	जंगल के देवदार और आदिवासी जीवन संघर्ष	दीपू शर्मा	149
41	महाराष्ट्र के विमुक्त एवं घुमंतू जनजातियों का पारंपरिक व्यवसाय	व्यंकट बा. धारासुरे	153
42	सूर्यबाला की कहानियों के बहाने बाल- विमर्श	डॉ.बालाजी भुरे	157
43	सुषमा मुनींद्र के कहानियों में बाल विमर्श	प्रा.कु.अलका घोडके	163
44	रानी दर की कहानी मै ने कह दिया न बस में बच्चो का शोषण	डॉ.शीना प्रभाकरन	165
45	वर्तमान समय में बालाश्रम की स्थिति	माधवी खजुरिया	172
46	मन्नू भंडारी के आपका बंटी उपन्यास में चित्रित बाल विमर्श	अश्विनी जाधव	175
47	बाल साहित्य लेखन एवं शोध : कल, आज और कल	सागर चौधरी	178
48	'इदगाह और छोटा जादूगर' कहानी में चित्रित बाल विमर्श	डॉ. किरण चौगुले	183
49	डॉ.दिनेश चमेला शैलेश जी के कहानियों में बाल मनोविज्ञान	डॉ. सी. जी. आंगडी	186
50	दिव्यांग विमर्श	डॉ.अनिल कांबळे	188
51	क्षमा शर्मा के बाल साहित्य में दिव्यांग विमर्श (भाईसाहब बाल उपन्यास के संदर्भ में)	सुश्री छाया माळी	190

इस अंक के सभी अधिकार प्रकाशकने आरक्षित किये है। प्रकाशित आलेख पुन:प्रकाशित करने से प्रकाशक एवं लेखक की संयुक्त लिखित अनुमती जरुरी है। प्रकाशित आलेखो में व्यक्त मंतव्य केवल लेखक के है मंतव्य से संपादक और प्रकाशक सहमत हो, यह जरुरी नहीं है। आलेख के संदर्भ में उपस्थित कॉपी (Originality of the papers) की जिम्मेवारी स्वयं लेखक की है।

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 83 : समकालीन हिंदी कथा- साहित्य में विविध विमर्श
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
January-2019

डॉ.दिनेश चमेला "शैलेश" जी के कहानियों में बाल मनोविज्ञान

डॉ. सी. जी. अंगडी
M.G.V.C College, Muddebihal – Dist: Vijayapura
State: Karnataka

बाल मनोविज्ञान वास्तव में शुद्ध मनोविज्ञान की एक महात्वपूर्ण शाखा है। इसके अंतर्गत बालकों का अध्ययन किया जाता है। यह अध्ययन गर्भधारण से आंरभ होता है, और परिपक्वता तक जारी रहता है। यह अध्ययन विकासात्मक दृष्टिकोण से किया जाता है। बच्चों के शरीरिक तथा मानसिक क्रियाओं का विकास किस प्रकार होता है, इसका , अध्ययन बाल-मनोविज्ञान में किया जाता है। बाल-मनोविज्ञान को विकासात्मक मनोविज्ञान कहना अधिक सही है। कारण यह कि इसमें बालकों के शारीरिक तथा मानसिक विकास के भिन्न-भिन्न पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। बच्चों के ज्ञानात्मक श्रमता का अध्ययनका अध्ययन बाल-मनोविज्ञान के क्षेत्र में किया जाता है। बच्चों में देखने की क्षमता सुनने की क्षमता आदि का विकास कैसे होता है, इसका अध्ययन बाल- मनोविज्ञान करता है।

बीसवी शताब्दी के अंतिम दशक में बाल-साहित्य लेखन की दुनिया में डॉ. दिनेश चमोला जी ने धमाकेदार ढंग से प्रवेश किया और तब से अब तक उन्होंने प्रौढो के लिए साहित्य लिखने के अतिरिक्त बहुत बडी संख्या में बाल कहानी संग्रह, बाल कविताएँ, बाल उपन्यास आदि लिख डाली है। इन रचनाओं के दर्जनों संग्रह भी प्रकाशित हो चुके है। इनकी रचनाओं में उत्तर-भारत की पहाडी क्षेत्रों में रहनेवाले बच्चों के जीवन तथा उनके मनसिक स्थिति को दर्शाने में सफल प्रयास हुआ है। इनकी रचनाओं की विशेषता यह रही कि कहानियों की शुरुवात आम जिंदगी से शुरु होकर कल्पना जगत्त में प्रवेश करता हैं। इनकी यही विशेषता बच्चों को अपनी साहित्य की और आकर्शित करती है। दिनेश जी की कहानी 'बर्फ की प्रतिमा' में गंगु नामक लडके की बाल सुलभ चेष्टाओं को इस कहानी में कहने की प्रयास किया हैं। इस कहानी में एक बर्फ की प्रतिमा को बनाकर दुसरे ही क्षण में उसके सामने रोने लगता है। क्योंकि उसके मन में उस प्रतिमा को लेकर जो आदर प्रेम था वह तो कुछ ही क्षणों कि थी। क्योकि धुप चढते ही बर्फ की प्रतिमा पिघल जाएगी सोचकर वह उस प्रतिमा के सामने बैठकर वन देवी से "है वन देवी यदी मैंने सच्ची श्रद्धा से वह प्रतिमा बनाई हैं तो यह ऐसी ही बनि रहे"।[21]कहकर घर चला जाता है। रात भर उसी प्रतिमा को लेकर चिंतित रहता है। अगले दिन उसे देखकर उसका मन प्रफुल्लित हो जाता है। इस प्रकार लेखर गंगु की मनोस्थिति को दर्शाने का प्रयास किया है।

'स्वप्न परी का महल' कहानी में सोनगर्भा स्वप्न परी को देखने की इच्छा से जंगल चला जाता है। लेकिन वह परी को न पाकर उसका मन विचलित होता है, और वह रोते लगता है। आँखे खोलकर देखा तो उसके सामने स्वप्न परी खडी थी। उसे देखकर खुशी होती है। परी से अपने गाँव और माता पिता को भूकंप में खो देने की खबर देता है। परी से बिनति करके उसे जीवीत करने के लिए कहता है। तब परी माता-पिता या गाँव दो में से एक को चुनने के लिए कहा तो वह गाँव चुनता है। इससे इस कहानी का नायक [बच्चों] की मानोविज्ञान को इस प्रकार देख सकते है। "मेरी तरह घर से बाहर गए लोग जब अपने गाँव लोटेंगे तो गाँव मैं किसी को न पाकर बहुत दुखी होंगे। इसलिए सारे गाँव के भलाई में मैं अपनी भी भलाई समझाता हूँ।[22]इस कहानी में उस बच्चे की मन में अपने गाँव के प्रति रहने वाला आदर और प्थार को देख सकते है।

1[21]प्रतिनिधि बाल- कहानियों डॉ. दिनेश चमोला शैलेश – पृ स. २७
[22]प्रतिनिधि बाल कहानियों डॉ. दिनेश चमेला शैलेश पृ.स ५७

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 83 : समकालीन हिंदी कथा- साहित्य में विविध विमर्श
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
January-2019

M.V.C. Arts, Commerce & Science College MUDDEBIHAL -586212 Dt: Vijayapur.

"रामदेव की सच्चाई में एक अनाथ लकडहारा लडके की सच्चाई और परिश्रम को देखते है। उस बच्चे की मन में बिना परिश्रम के एक दाना भी वह किसी से मांगने के लिए तय्यार नहिं है। भूक से तडपने के बावजूद भी। एक दिन एक गडेरिया ने अन्न देना जाहा तो वह लडका उसे- उन्न देवाता आप बूरा ना मानो"।[23]इससे उस लडके को परिश्रम के प्रति किस प्रकार सोचता है, और इसके मन में उसकी माँ की बातों का असर किस प्रकार हुआ है इसे देख सकते है।

दिनेश जी की नानी की कहानियों में एक है 'प्रेम-प्यार की भूख' इसमें पक्षियों के प्रति बच्चों के मन में किस प्रकार प्यार है और पक्षियों की देखबाल किस प्रकार करना है इसका सुन्दर चित्रण इसमें देख सकते है। बच्चें पक्षियों को कितना प्यार करते है इसे दो बच्चों के उदाहरण देकर कहने को पुर्ण प्रयास लेखक ने किया है। इसमें – प्रेम केवल मनुष्य को ही नहिं बल्कि पशु-पक्षियों को भी अपना बना देता है। हमें जीवों से प्यार करना चाहिए।[24]

'रोहित का तोता' इसमें रोहित एक दिन कुत्ते के मुँह से तोते को बचाकर उसे बहुत ही प्यार से देखबाल करता है। कुछ दिनों बाद दोनो दोस्त बन गए । रोहित उसे अपने जान से भी ज्यादा चाहने लगा। इसके मन में उस तोते के प्रती प्यार और आदर था। इस प्रकार लेखक बच्चों के मन की मनोदशा को दर्शाया है।

दिनेश जी बच्चों के मन को और भी खुश और प्रसन्न करने के लिए सिर्फ अपने कहानियों में बाल-मनोविज्ञान को ही नही उसके साथ-साथ बच्चों के मन को और भी लुभाने के लिए प्राणियों और पक्षिओं के बहुत सारे कहानियों की रचना की है। "साँप और नेदाला की कहानी में इस प्रकार चित्रण करते है, - की दोनों आति घनिष्ठ मित्र है। दोनों की मित्रता पूरे जंगल में एक मिसाल थी वे दोनों पुरे जंगल में हँसते –खेलते बहुत खुशि से जी रहे थे। दोनो ही मजाक करने में एक दुसरे के गुरु थे। एक दिन टिनु साँप और निमू नेवला ने मन में अचानक एक दुसरे से मजाककरने की बात सोची और टीनु ने नीमू से उसके बच्चे मार गिराये कहकर रोने लागा निमू ने भी टिनू ने उसके बच्चों के साथ उसके माँ-बाप को भी मार दिया कहकर वह भी रोने लगा। अंत में सभी प्राणियों को पता चला की दोनों एक दुसरों से मजाक कर रहे थे। इस रहस्य को जानकर दोनों खिला खिलाकर हँसने लगे। इस कहानी के माध्यम से लेखक का कहनी हैं कि मजाक भी सोच-समझकर ही करना चाहिए नहीं तो मजाक, मजाक में किसी का प्राण भी चला सकता है।

चील चली स्वर्ग की ओर कहानी में एक चील नामक सुदर पक्षी की कथा है। चील पक्षि कितनी सुंदर है उतनी ही तुफान की तरह उसकी उडान है। उडान में इसकी बराबर करने वाला कोई और पाक्षि नहीं थी। दुनिया में बहुत अजुब चील थी वह। इसलिए सभी चीले इससे ईर्ष्या करती थी। लेकिन इसकी एक कमज़ोरी भी थी। कोई भी उसकी प्रशंसा के रुप में कुछ कहने लगते है तो वह पल भर में धरती से आकाश की ओर उडने की कोशिश करती थी। एक दिन एक अबाबील ने उससे स्वर्ग लोक की रानी बन जाओं वहाँ तुम्हारी बराबरी करनेवाला कोई नहीं है। तुम स्वर्ग चली जाओगी तो सारी धरती तुम्हारि गूणों का वर्णन करेंगे। इस तरह की बाते सुनकर चील फूले न समाई और सीर्ध आकाश की और उडने लगी। वह उडते-उडते इतनी ऊपर चली गई की वहाँ आकसीजन खत्म हो गई। चील बेहोश होकर नीचे गिर गई और अपने प्राण गँवादी। इस कहानी में दूसरों के बात सुनने से पहले हमें अपनी करनी पर सोच-विचार करना आवश्यक हैं।

इस प्रकार लेखक ने अपने अनेक साहित्य के जरीए बच्चों की मनोदशा का चित्रण करने में सफल बन गए इतना ही नहीं बहुत सारी कहानियों में, कविताओं में उपन्यासों में एकांकीयों में बच्चों की बाल सुलभ चेष्टाओं को दार्शाने का पूर्ण प्रयास लेखक जी ने किया है।

---

[23]प्रतिनिधि बाल कहानियों डॉ. दिनेश चमेला पृ.स २५४

[24] नानी की कहानियाँ-डांदि चशै- पृ.स ५

शताब्दी महोत्सव १९१९-२०१९

।। शिलं परम् भूषणम् ।।

सोलापूर विद्यापीठ
।। विद्या संपन्नता ।।

कै. श्रीमंत सौ. उमाबाईसाहेब पटवर्धन स्मारक संस्था, मोडनिंब संचलित

मा.ह. महाडीक कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, मोडनिंब, जि. सोलापुर

(नॅक मुल्यांकित 'बी' दर्जा)

हिंदी विभाग एवं सोलापुर विश्वविद्यालय सोलापुर
के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

दि. ५ जनवरी, २०१९

प्रमाणपत्र

प्रा./डॉ./श्री./~~श्रीमती~~ एस. सी. ... अंगडी

विश्वविद्यालय / महाविद्यालय एम. जी. वी. सी. कॉलेज, मुद्देबिहाल, जि. विजयपुर

दि. ५ जनवरी, २०१९ को "समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में विविध विमर्श" इस विषय पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी मे प्रमुख अतिथि/~~सत्राध्यक्ष~~/~~विषय प्रवर्तक~~/शोधालेख प्रस्तोता/~~प्रतिभागी~~ के रुप में सम्मिलित होने के उपलक्ष्य में, यह प्रमाणपत्र दिया जाता है।

डॉ. सुरैय्या शेख	डॉ. दादासाहेब शिंदे	डॉ. मृणालिनी फडणवीस
अध्यक्षा-हिंदी विभाग तथा संयोजक राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रधानाचार्य	कुलपति
मा.ह. महाडीक कला व वाणिज्य महाविद्यालय, मोडनिंब	मा.ह. महाडीक कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, मोडनिंब	सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर

Co-ordinator, Internal Quality Assurance Cell
M.G.V.C. Arts, Commerce & Science College
MUDDEBIHAL-586212. Dist: Vijayapur.

PRINCIPAL,
M.G.V.C. Arts, Com. & Science College
MUDDEBIHAL - 586212.

M.G.V.C. Arts, Commerce & Science College MUDDEBIHAL -586212 Dt: Vijayapur.